भाषा वह जो भावनाओं को अनेक रंगों में रंगती है, जो भावनाओं के संप्रेषित करने में अहम भूमिका निभाती है जो पात्रों के व्यक्तित्व को उद्‌भाषित करती है , जो जड़ चीजों में भी प्राण डाल देती है, और सांकेतिक रूप से वह सब कह देती है जो तमाम–तमाम शब्दों में भी नहीं कहा जा सकता है। मन्नू भंडारी की भाषा ने वह कमाल किया है जो साहित्य को आम पाठकों से लेकर खास पाठकों, बुद्धिजीवियों और विद्धानों तक पहुंचा सकी है। उनकी कहानियों की भाषा हो या उपन्यासों की या आत्मकथा की उसमें एक खास किस्म की तरलता, तटस्थता, साफगोई, दृश्यात्मकता, चित्रात्मकता, व्यंग्यात्मकता और भावनात्मकता दिखाई देती है। उनकी भाषा सूक्तियों की तरह जीवन, प्रकृति और व्यक्तिओं के रहस्यमय से लगने वाले स्थलों को खोलती जाती है। जीवन या व्यक्ति जैसा दिखाई दे रहा है वह उतना ही या वैसा ही नहीं हैं। भाषा देश, जाति, समाज व्यक्ति और वर्ग की पहचान होती है। मन्नू जी ने हर पात्र और स्थिति को व्यक्त करते हुए भाषा पर ध्यान दिया है। उनका लेखन कभी भी कहीं भी अपनी भाषा नहीं बोलता है, न बोलने की कोशिश करता है। जैसा परिवेश वैसी भाषा। यही बात रचनाकार को बड़ा बनाती है कि वह स्वयं रहकर भी स्वयं को अलग रखे, यद्यपि मन्नू जी की भाषा के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है और लिखा जाता रहेगा, लेकिन मन्नू जी की कहानियों, उपन्यासों और आत्मकथा को पाठक बार–बार पढ़ते रहेंगे, सराहते रहेंगे क्योंकि उन्हें लगता है कि उनकी बात को, उनकी भावनाओं को उनके संघर्षों को और उनके सुख दुःखों को उनकी अपनी भाषा में कहा गया है।

संदर्भ

1. डॉ. श्यामसुंदर दास : 2009 : भाषाविज्ञान : प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
2. डॉ. भोलानाथ तिवारी : 2010 : भाषा विज्ञान : किताब महल, नई दिल्ली
3. देवेन्द्रनाथ शर्मा/दीप्ति शर्मा : 2007 : भाषा विज्ञान की भूमिका : राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0, नई दिल्ली
4. मन्नू भंडारी : 2009: सम्पूर्ण उपन्यास : राधाकष्ष्ण, नई दिल्ली
5. राजेन्द्र यादव/मन्नू भंडारी : 1962 : एक इंच मुस्कान : अक्षर प्रकाषन, नई दिल्ली
6. मन्नू भंडारी :1979: महाभोज : राधाकष्ष्ण प्रकाषन प्रा. लि. नई दिल्ली
7. मन्नू भंडारी : 1971 : 'आपका बंटी' : अक्षर प्रकाषन प्रा. लि. : नई दिल्ली
8. मन्नू भंडारी : स्वामी : 2003 : नेषनल पब्लिषिंग हाऊस : नई दिल्ली
9. पाखी : सं0 प्रेम भारद्वाज : जनवरी– 2016

****

मूर्धन्य आलोचक डॉ. सुरेन्द्र चौधरी : एक परिचय

डॉ0 विवेकानंद मिश्र*

मगध का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली रहा है। इतिहास के कालखंड में मगध का इतिहास ही भारत वर्ष का इतिहास रहा है और मगध राज्य का केन्द्र–बिंदु गया नगर रहा है, जिसे कई संज्ञाओं और विशेषणों से अभिहित किया गया है, यथा–विश्व की प्राचीन नगरी, मुक्ति–धाम, सिद्ध–पीठ, गया धाम, सांस्कृतिक राजधानी आदि। साहित्य, कला, विभिन्न धर्मों, दर्शनों, संस्कृतियों को समेटे यह गया नगरी, अद्‌भुत नगरी है। प्रकशति ने इसे उर्वरा भूमि और वनों से सुसज्जित किया है। यह विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों का सेतु है। इसकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक विरासत अत्यंत सुदृढ़ रही है। यहॉ साहित्य, संस्कृति व कला की समृद्धशली परंपरा रही है। यह साधना और आराधना की पावन–भूमि रही है।

इसी पावन–भूमि में डॉ. सुरेन्द्र चौधरी का जन्म 13 जून 1933 को ज्येष्ठ संतान के रूप में मैथिली ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनकी माताजी का नाम **श्रीमती माधुरी चौधरी** एवं इनके पिता जी का नाम श्री वीरेन्द्र नारायण चौधरी था। इनकी शिक्षा का प्रारम्भ घर पर ही हुआ। आगे चलकर पॉचवीं कक्षा से ग्याहरवीं कक्षा तक की पढ़ाई गया के जिला स्कूल (गुरुपिंडा) में संपन्न हुई। ग्यारहवीं की परीक्षा पास करने के बाद इन्होंने गया कॉलेज गया से स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा की परीक्षा पास की। स्नातकोत्तर की पढ़ाई के लिए सन् 1953 ई. में पटना विश्वविद्यालय में नामांकन कराया। शीघ्र ही यहॉ वे आचार्य नलिन विलोचन शर्मा जी के प्रिय शिष्यों में शुमार हो गये। सन् 1955 ई. में स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की। आगे चलकर सन् 1970 ई. में 'अस्तित्ववाद और हिंदी साहित्य' विशय पर स्वतंत्र रूप से पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की। श्री सुरेन्द्र नारायण चौधरी का विवाह सन् 1956 ई. में हुआ। इनकी पॉच संताने हुईं जिनमें दो सुपुत्र और तीन सुपुत्रियॉ है ।

स्नातकोत्तर परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त करने के बाद उसी वर्ष (सन्1955) 4 अक्टूबर 1955 ई. को गया कॉलेज गया में इनकी नियुक्ति हिंदी प्रवक्ता पद पर हुई। आगे चलकर वे इसी कॉलेज में हिंदी विभाग के अध्यक्ष (31जनवरी 1990

***पीएच0 डी हिन्दी विभाग मगध विश्वविद्यालय बोधगया**

से 30 जून 1993 तक) भी बने। उस काल में गया कॉलेज के हिंदी विभाग की एक पृथक पहचान वहॉ सेवारत विद्वान शिक्षकों के कारण थी। इन्होंने आते ही विभाग की प्रतिष्ठा को चरमोत्कर्ष पर पहुॅचा दिया। हिंदी परिषद्' का गठन किया और उसके तत्वावधान में एक से बढ़कर एक संगोष्ठी–सेमिनार आदि का आयोजन करवाया। इन कार्यक्रमों में देश के ख्यातिलब्ध विद्वानों और कलाकारों की सहभागिता होती थी। चौधरी जी के कुशल निर्देशन और मार्गदर्शन में प्रतिवर्ष अखिल भारतीय सेमिनार आयोजित होता था। सन् 1960 ई. के एक सेमिनार में मनोवैज्ञानिक कथाकार श्री जैनेन्द्र कुमार ने सभापति का पद सुशोभित किया था। यहॉ के कार्यक्रमों में आनेवाले कुछ अन्य प्रमुख ख्यातिलब्ध लोगों के नाम हैं– श्री पृथ्वीराज कपूर (सुप्रसिद्ध नाट्य और फिल्म अभिनेता), आचार्य नलिनविलोचन शर्मा, श्री राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, आचार्य केसरी कुमार, श्री भैरवप्रसाद गुप्त, श्री शिवदान सिंह चौहान, श्री यशपाल, डॉ. भगवतशरण उपाध्याय, डॉ. प्रकाशचन्द्र गुप्त, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, त्रिलोचन शास्त्री, मार्कण्डेय, डॉ. जगदीश गुप्त, डॉ. नामवर सिंह, डॉ. विशंभरनाथ उपाध्याय, डॉ. परमानंद श्रीवास्तव, आदि की सहभागिता के मूल में डॉ. चौधरी का साहित्यिक व्यक्तित्व ही था। उस काल को याद करते हुए डॉ. रामविनोद सिंह कहते हैं–'उन आयोजनों के प्राणतत्व ख्यातिलब्ध समालोचक स्वर्गीय सुरेन्द्र चौधरी थे।

शोध–निर्देशनः–डॉ. सुरेन्द्र चौधरी के कुशल शोध–निर्देशन में ग्यारह पीएच.डी. और एक डी.लिट् की उपाधियॉ भी शोध–प्रज्ञों ने प्राप्त की गयी हैं।

डॉ. चौधरी अपने विषय के मूर्धन्य विद्वान और सफल शिक्षक थे । इस संदर्भ में पंडित रामनरेश पाठक ने लिखा है– 'सुरेंदर एक बहुत ही अच्छा अध्यापक है। जब–तक विशय को स्वच्छ निर्मल जल की तरह पारदर्शी बनाकर छात्रों को परोस नहीं देता, तब तक इसे चैन नहीं है।'

मित्रमंडलीः– छात्रावस्था में ही चौधरी जी की अभिन्न मित्रता कवि, कथाकार राजकमल चौधरी से हो गयी थी, जिनका घरेलु नाम 'फूल राजा' बाबु था। योगेन्द्र चौधरी भी इनके गहरे मित्र थे। सुरेन्द्र चौधरी, योगेन्द्र चौधरी और राजकमल चौधरी की तिकड़ी पूरे गया शहर में ख्यातिलब्ध थी। त्रिवेणी शर्मा 'सुधाकर', पंडित रामनरेश पाठक/(कवि) आचार्य विश्वनाथ सिंह, डॉ. रामविनोद सिंह, अफसा जफर, डॉ. सत्यदेव सिंह, डॉ. शैलेन्द्र अग्रवाल, मार्कण्डेय (कथाकार, सम्पादक), डॉ. नामवर सिंह, (सुप्रसिद्ध आलोचक), डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय, ज्ञानरंजन, डॉ. खगेन्द्र ठाकुर, डॉ. रविभूषण, डॉ. मुरलीमनोहर प्रं सिंह, कथाकार अमरकांत, रवीन्द्र कलिया (कथाकार संपादक), डॉ. अरुण कमल, आदि इनके परम मित्र थे। वैसे तो

संख्या हजारों में है। राजकमल चौधरी इनके विशिष्ट मित्र थे, जिनके दिवंगत होने पर इन्होंने एक बड़ी ही मार्मिक कविता 'स्मृति दंश' लिखी थी।

डॉ. मुरलीमनोहर प्र.सिंह अपनी और उनकी मित्रता के संदर्भ में लिखते है–''आपातकाल का विरोध करने के कारण मुझे 25 जून 1975 की रात को नजरबंदी कानून के तहत गिरफ्तार कर लिया गया। मुझे बाद में पता चला कि मेरे परिवार से इस बीच उनका सम्पर्क बना रहा और वे मेरा समाचार जानने को उत्सुक रहते थे'।

व्यक्तित्व के आयामः– चौधरी जी अपने कॉलेज के शिक्षक संघ के सचिव भी रहे थे और आंदोलनों में आगे रहकर बढचढ कर हिस्सा लेते थे।वे जितना हिंदी के हितैशी थे, उतना ही उर्दू भाषा के। मगध विश्वविद्यालय में जब उर्दू विभाग खोलने की बात आई तो सीनेट के एक सदस्य की हैसियत से उन्होंने इसको पारित कराया।

सोवियत रूस में अध्यापन का अवसरः– सुरेन्द्र चौधरी के एक मित्र 'कमर रईस'सोवियत रूस के मास्को शहर में कई पत्रिकाओं का संपादन–कार्य करते थे। सन् 1970 के दशक में उनके मित्र ने वहॉ हिंदी प्रोफेसर पद के रिक्त हेाने की सूचना दी और आवेदन करने हेतु आवेदन फार्म भी भेजा, किंतु चौधरी जी ने इस बड़े अवसर को यों ही हाथ से जाने दिया। यह घटना चौधरी जी के अपनी जन्मभूमि और अपने संयुक्त परिवार से लगाव को परिलक्षित करती है। वे गया छोड़ कर बेहतर पद प्राप्त करने के पक्ष में कभी नहीं रहे।

विविध भाषा, विषय के ज्ञाताः–डॉ. सुरेन्द्र चौधरी की प्रतिभा किसी सीमा में आबद्ध नहीं थी। उनका संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी आदि भाषा–साहित्य पर समान अधिकार था। बांग्ला, फ्रेंच, रूसी भाषा साहित्य का भी उन्होंने गंभीर अध्ययन किया था। इसके अतिरिक्त इतिहास, दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, ज्योतिशशास्त्र के भी वे गंभीर अध्येता थे। मगही, मैथिली, भोजपुरी आदि भाषा–साहित्य से भी वे पूर्णतः परिचित थे।

आलोचक मुरलीमनोहर प्रसाद सिंह ने इनके ज्ञान और विद्वता की प्रशंसा करते हुए लिखा है–उनकी ज्ञान–मीमांसा और सौंदर्य बोधीय चिंतन का दायरा बहुत व्यापक था। एक ओर यदि वे उत्तर आधुनिकता पर साधिकार बोल और लिख सकते थे, अस्तित्ववाद का आलोचनात्मक भाष्य प्रस्तुत कर सकते थे, बाख्तिन तथा एलेन टेट के परखचे उड़ा सकते थे, देरिदा का हिसाब चुकता कर सकते थे, दूसरी तरफ आख्यायिका, नैरेटिव, फैंटेसी, उपन्यास तथा छोटी कहानी के ऐतिहासिक विकास के प्रक्रम पर अद्यतन सामग्री के आलोक में अपनी तीक्ष्ण दृष्टि का भी परिचय दे सकते थे। मार्क्स–पूर्व और मार्क्स के बाद तक की

अविच्छिन ज्ञान–परम्परा को आत्मसात करने में वे संकीर्ण हदबंदियों से बंधे हुए नहीं थे। कांट, हीगेल, नीत्शे, क्रोचे से लेकर लीविस, क्लींथ, ब्रुक्स, एलेन टेट तक, भामह से लेकर नलिनविलोचन शर्मा तक सम्पूर्ण ज्ञान निधि में गोते लगाकर कहीं से भी कोई सूत्र वे निकाल सकते थे। अंगरेजी, फ्रांसीसी और बांग्ला–इन तीनों भाशाओं का उन्हें ज्ञान था।''

वामपंथी गतिविधियॉः– सुरेन्द्र चौधरी सन् 1949 ई. में स्टूडेंट फेडरेशन के सक्रिय सदस्य बन चुके थे। सन् 1953 ई. से वे भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के कार्डहोल्डर सदस्य बने और आजीवन सदस्य रहे। डॉ. खगेन्द्र ठाकुर के अनुसार–''पार्टी की सदस्यता उनके लिए न तो कोई शोभा की बात थी और न किसी अवसर की अभिव्यक्ति मात्र। वह उनकी मानसिक बनावट की, उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता की अभिव्यक्ति थी, क्रियाशील अभिव्यक्ति।'' सन्1957 के महासम्मेलन के बाद प्रगतिशील लेखक संघ से विधिवत रूप से जुड़े। एक दो वर्षों के भीतर ही अपनी प्रतिभा के बल पर बिहार प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष बने और कुछ अंतरालों को छोड़कर आजीवन बिहार प्रगतिशील लेखन संघ के दायित्व का कुशल निर्वहन किया। साथ ही वे इस संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के मानक सदस्य भी रहे और अंत काल तक जुड़े रहे। अपने कार्यकाल में उन्होंने एक से बढ़कर एक अविस्मरणीय सेमिनार, गोष्ठियॉ कराईं, अखिल भारतीय स्तर का महासम्मेलन आयोजित कराया। सन् 1966 ई. में बिहार में भीषण अकाल पड़ा था। अकालपीडितों की सहायता के लिए गया में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की गोष्ठी सुरेन्द्र चौधरी के पहल पर हुई जिसमें सज्जाद जहीर, कृष्णचंदर, साहिर लुधियानवी, मखदूम, ख्वाजा अहमद अब्बास, रामलाल, इन्दीवर और अली सरदार जाफरी आदि प्रमुख थे। सन् 1975 (6–9मई) ई. में गया षहर में अखिल भारतीय चारदिवसीय सम्मेलन प्र.ले.स. के पुनर्गठन के लिए किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन डॉ. अब्दुल अलीम द्वारा किया गया था इसमें डॉ. भीष्म साहनी को अखिल भारतीय प्र.ले.स. का महासचिव बनाया गया। इसमें वाल्टर क्रेस, (जर्मन लेखक), गुसेव (रूसी लेखक आलोचक), ख्वाजा अहमद अब्बास, कामतानाथ, दीपेन्द्र बंद्योपाध्याय, नवतेज सिंह, गुलाम रब्बानी, अली सरदार जाफरी, मल्ला रेड्डी, डॉ. विष्वनाथ त्रिपाठी, डॉ. भगवत षरण उपाध्याय, देवेष राय, डॉ. विजेन्द्र नारायण सिंह, कैफी आजमी, नामवर सिंह प्रभषति कितने ही साहित्यकारों की सहभागिता इसमें थी। सुरेन्द्र चौधरी अंतः और बाह्य दोनों स्तरों पर पूर्णतः मार्क्सवादी थे। इसीलिए तो मृत्यु से कुछ समय पहले उन्होंने अपनी अंत्येष्टि संस्कार तथा अन्य संस्कारों को हिंदू–विधि के अनुसार न करने के लिए अपनी डायरी में लिखा था।

लेखन में प्रवेशः–सुरेन्द्र चौधरी छात्र–जीवन से ही लेखन में प्रवृत हो गये थे। आरंभ में वे बड़े लेखकों की रचनाओं को नाट्यरूप प्रदान करते थे। इन्टरमीडिएट तक आते–आते विधिवत लेखन करने लगे। उनका एक निबंध गया कॉलेज की वार्षिक पत्रिका में प्रकाशित है–'हिंदी काव्य में प्रगतिवाद और उसका भविष्य' (प्रकाशन वर्श, सन् 1950), छात्रावस्था में ही तत्कालीन सुप्रसिद्ध पत्रिका 'साहित्य संदेश' (संपादक बाबू गुलाब राय) में इनका एक निबंध जैनेन्द्र कुमार की एक लेखमाला–'आदर्श क्याः संघर्श कि समन्वय' के प्रत्युत्तर में संघर्श के पक्ष में लिखा गया था। जिसकी भूरी–भूरी प्रशंसा विद्वानों ने की थी। उनका लेखन जीवन –पर्यन्त जारी रहा, उन्होंने शताधिक समीक्षात्मक निबंधों की रचना है जो देश–विदेश के पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है।

डॉ0 चौधरी की प्रकाशित पॉचो पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं –

1.हिंदी कहानी : प्रक्रिया और पाठ (1963,1995 राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली)
1. फणीश्वरनाथ रेणु (1987,साहित्य अकादमी दिल्ली)
2. हिंदी कहानी : रचना और परिस्थिति (अंतिका प्रकाशन दिल्ली)
3. साधारण की प्रतिज्ञाः अंधेरे से साक्षात्कार। ''
4. इतिहास, संयोग और सार्थकता ''
5. अस्तित्ववाद और हिंदी साहित्य (अप्रकाशित शोध–प्रबंध)

पुरस्कार–सम्मानः– पुरस्कारों में व्याप्त के राजनीति के कारण सुरेन्द्र चौधरी को पुरस्कार नहीं मिला। फिर भी उनकी जन्मभूमि गया में दो बार उन्हें सम्मानित किया गया। सर्वप्रथम सन् 1993 ई. में शारदा साहित्य मंच के द्वारा उन्हें एक गोश्ठी में सम्मानित किया गया। इस गोश्ठी के अध्यक्ष स्वर्गीय डॉ. गोपीनाथ पाठक और सचिव श्री विश्वनाथ मिश्र थे। इसमें डॉ. रामविनोद सिंह, डॉ. बच्चन सिंह, बालेन्दुशेखर तिवारी और चौधरी जी के गुरु डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद भी थे। यह सम्मान शिष्य को गुरु के द्वारा प्रदान किया गया।

वर्ष 1995–96 के लिए बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना की ओर से 15 अगस्त, 1996 को हिंदी शोध और आलोचना के लिए सुरेन्द्र चौधरी के द्वारा की गई हिदी सेवा के उपलक्ष्य में ग्यारह सहस्त्र मुद्रा का साहित्य सेवी सम्मान तत्कालीन राज्यपाल ए.आर. किदवई के हाथों प्रदान किया गया ।

चौधरी जी ने कई अंतर्राज्यीय गोष्ठियों में अध्यक्षता की थी और प्रमुख वक्ता बने थे। इन गोष्ठियों की कई परिचर्चाऍ आकाशवाणी द्वारा प्रसारित की गई, जिनमें यह परिचर्चा भी शामिल थी 'कथालोचना संकट'।

उनका अंतिम सम्मान बिहार राज्य प्रगतिशील लेखक संघ और गया जिला प्रगतिशील लेखक संघ के सहयोग से गया के धर्मसभा भवन में 14 मई

2000 को किया गया था, जिसमें देश के कोने–कोने से साहित्यकार बड़ी संख्या में उपस्थित होकर और उद्‌बोधन कर इनके प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया था। इस कार्यक्रम में कथाकार कमलेश्वर मुख्य अतिथि थे, जिनके हाथों सम्मान दिया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. खगेन्द्र ठाकुर, डॉ. रविभूषण, डॉ. विजेन्द्र नारायण सिंह, मधुकर सिंह, भास्कर राव, शैवाल आदि कई नामवर साहित्यकार उपस्थित थे। इतना बड़ा समारोह फिर आयोजित नहीं हो सका।

निधन और शोक–संवेदनाः–जिन्दगी के घातों–प्रतिघातों से संघर्ष करते–करते सुरेन्द्र चौधरी के जीवन की सांध्यबेला शनै–शनै दस्तक देने लगी। मृत्यु के दस वर्श पूर्व से ही उनका स्वास्थ्य गिरने लगा था। वे मधुमेह की बीमारी की सशक्त चपेट में आ चुके थे। हाई बल्डप्रेशर ने भी उन्हें आ घेरा था। स्मरण शक्ति क्षीण होने लगी, आवाज कॉपने लगी और मृत्यृ से तीन वर्ष पूर्व वे पक्षाघात के भी शिकार हो गये।

खाना–खाने के पूर्व मधुमेह की अधिकता के कारण मृत्यु के पॉच वर्ष पूर्व से ही नियमित रूप से इनसुलिन की सूई श्रीमती चौधरी के द्वारा लगाई जाने लगी। तब जाकर थोड़ा बहुत खाना खाते। इस प्रकार दिनों–दिन उनका शरीर कमजोर होता गया और अंततः 9 मई 2001 ई. को यह अप्रतिम आलोचक संघर्ष करते–करते अपने नश्वर शरीर को त्याग कर इस संसार से विदा हो गया।

इनके निधन का समाचार आकाशवाणी के राष्ट्रीय प्रसारण में प्रसारित हुआ तथा राष्ट्रीय और प्रादेशिक समाचार पत्रों में सप्ताह भर प्रमुखता से प्रकाशित हुआ, जिसमें शोक संवेदनओं का तांता लगा रहा। कुछ शोक संवेदनाएँ इस प्रकार हैं।

''हिंदी समालोचना के एक तेजस्वी मेधावी समीक्षक के नाते सुरेन्द्र चौधरी का योगदान अविस्मरणीय है। उनके असमायिक निधन से संगोष्ठियों का एक तेज–तर्रार वार्ताकार हमारे बीच से चला गया है।''

मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, (जनसता 20 मई 2001), हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. रामविनोद सिंह ने कहा कि डॉ. चौधरी की उपेक्षा उस विश्वविद्यालय ने की थी, जिसके अन्तर्गत उनका कार्यक्षेत्र रहा, उनकी उपेक्षा विचारधारा वालों ने भी की, किन्तु उनके कृतित्व को उन्होंने एक अमूल धरोहर कहा।

डॉ. खगेन्द्र ठाकुर ने अपने शोक–संदेश में कहा कि –''डॉ. चौधरी के देहावसान से हिंदी आलोचना और कम्युनिस्ट आंदोलन को भारी नुकसान पहुॅचा है। डॉ. चौधरी हिंदी जनता के हितों के प्रतिनिधित्व करने वाले बौद्धिक समुदाय के अत्यंत प्रमुख सदस्य थे। श्री ठाकुर ने इनके देहावसान को अपना निजी नुकसान बताया।''

डॉ. राधानंद सिंह ने उन्हें याद करते हुए कहा–अप्रतिम समीक्षक, विचारक और चिंतक डॉ. चौधरी के असामयिक निंधन से डॉ. रामविलास शर्मा के बाद दूसरी बड़ी क्षति हुई है।

उपसंहारः– उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के संदर्भ में डॉ. मैनेजर पांडेय ने 'बया' के अपैल–जून, 2011के अंक में लिखा है– ''सुरेन्द्र चौधरी ऐसे आलोचक हैं, जिनकी आलोचना में गंभीर साहित्य–विवेक है और उसका जीवन–विवेक तथा जगत–विवेक से गहरा संबंध है। उनकी चाहे 'नई कहानी' और बाद की कहानियों की आलोचना हो, 'गोदान' का विश्लेषण हो, 'मैला ऑचल' का विवेचन हो या 'मुक्ति–प्रसंग' का मूल्यांकन हो, इन सबमें सावधान पाठकों केा सुरेन्द्र चौधरी के साहित्य–विवेक, जीवन–विवेक और जगत–विवेक का साक्षात्कार अवश्य होगा।'' सुरेन्द्र चौधरी हिंदी कथालोचना के एक बहुत ही गतिशील अन्वेषणशील व्यक्तित्व थे (सुरेश सलिल, पत्रिका बया–अप्रैल–जून,2011) वे साहित्यिक जीवन– संग्राम के जुझारू योद्धा था। वे संघर्षशील व्यक्तित्व थे, परदुःखकातर थे, समाज–सेवी, और प्रगतिशील चिंतक थे। उनका दैहिक कद अपेक्षाकृत छोटा था, लेकिन मानस और हृदय की विशालता असीम थी। एक कुशल शिक्षक, प्रखर वक्ता, शास्त्रीयता और पांडित्य के वे शिखर पुरुष थे।

संदर्भ–सूची

1. श्री सिद्धेश्वर चौधरी 'मंजू' (सुरेन्द्र चौधरी के चाचा जी) द्वारा लिखित ''पं. कालीप्रसाद चौधरी 'मीत' (व्यक्तित्व–कृतित्व परिचय) निबंध पर आधारित। साहित्य (त्रैमासिक पत्रिका)
   वर्ष 7, अंक–1,अप्रैल–1954
   संपादक :– शिवपूजन सहाय, नलिन विलोचन शर्मा
   पृष्ठ संख्या– 43,44,45,46
   प्रकाशकः– हिंदी साहित्य सम्मेलन और बिहार राश्ट्रभाशा परिशद्‌–पटना।
2. डॉ. सुरेन्द्र चौधरी के अनुज स्वर्गीय नरेन्द्र नारायण चौधरी के सौजन्य से प्राप्त वंश–वृक्ष पर आधारित।
3. अथातो सुरेन्द्र जिज्ञासा (ललित निबंध) (व्यक्तित्व–कषतित्व परिचय),श्री रामनरेश पाठक (चौधरी जी के परम मित्र), परिवेश–13, अनियतकालिक पत्रिका, संपादक–कुमार संभव, मूलचंद गौतम, पृ.–117
   संपादकीय संपर्क, शक्तिनगर, चन्दौसी, मुरादाबाद (उ.प्र.) 202412
4. डॉ.सुरेन्द्र चौधरी की सहधर्मिणी श्रीमती दमयंती चौधरी के साथ वार्तालाप पर आधारित।

****